Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 05 नवंबर, 2022

देशबंधु चित्तरंजन दास

चित्तरंजन दास का जन्म **5 नवंबर, 1870** को कोलकाता में हुआ था। चित्तरंजन दास को प्यार से **'देशबंधु'** कहा जाता था। वे महान राष्ट्रवादी तथा प्रसिद्ध विधि-शास्त्री थे। चित्तरंजन दास ने वकालत छोड़कर गांधीजी के**असहयोग आंदोलन** में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और पूर्णतया राजनीति में आ गए।**भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस** के सिद्धांतों का प्रचार करते हुए उन्होंने पुरे देश का भ्रमण किया। चित्तरंजन दास**वर्ष 1922 में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष नियुक्त** किये गए लेकिन उन्होंने भारतीय शासन विधान के अंतर्गत संवर्द्धित धारासभाओं से अलग रहना ही उचित समझा। संपन्न परिवार से संबंध रखने वाले चित्तरंजन दास ने अपनी समस्त संपत्ति राष्ट्रीय हित में समर्पित कर दी।**कलकत्ता के नागरिकों के हित के लिये उन्हें नौकरियों में अधिक जगह देकर** हिन्दू-मुस्लिम मतभेदों **को दूर करने का प्रयास किया।** भारतीय समाज के लिये समर्पित, अधिक परिश्रमी तथा जेल जीवन की कठिनाइयों से जूझते हुए चित्तरंजन दास बीमार पड़ गए और **16 जून, 1925 को उनका निधन हो गया।**

विश्व सुनामी जागरुकता दिवस

विश्व सुनामी जागरुकता दिवस प्रत्येक वर्ष 5 नवंबर को मनाया जाता है। बार-बार सुनामी के कड़वे अनुभवों के कारण**जापान को इस दिवस को शुरू करने का श्रेय** दिया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में इसने सुनामी की पूर्व चेतावनी, सार्वजनिक कार्रवाई के साथ ही भविष्य के प्रभावों को कम करने के लिये आपदा के बाद बेहतर निर्माण जैसे कुछ क्षेत्रों में प्रमुख रूप से विशेषज्ञता हासिल की है। संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन के**सुनामी के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिये नामित किया,** ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जब सुनामी की चेतावनी लोगों तक पहुँचे तो समुदाय बिना किसी भय के निर्णायक रूप से कार्य करें। 22 दिसंबर, 2015 को **संयुक्त राष्ट्र ने संकल्प 70/23 के माध्यम से 5 नवंबर को विश्व सुनामी जागरुकता दिवस** के रूप में नामित किया। वर्ष 2021 में विश्व सुनामी जागरुकता दिवस "सेंडाई सेवन अभियान" लक्ष्य को बढ़ावा देता है, जिसका**उद्देश्य वर्ष 2030 तक वर्तमान ढाँचे के कार्यान्वयन के लिये अपने राष्ट्रीय कार्यों के पूरक हेतु पर्याप्त और स्थायी समर्थन** के माध्यम से विकासशील देशों के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाना है। विश्व सुनामी जागरुकता दिवस 2022 का उद्देश्य **शुरुआती चेतावनी प्रणालियों तक पहुँच बढ़ाकर वैश्विक स्तर पर सुनामी के खतरे को कम करना है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-05-november-2022